Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2020 GISRRJ | Volume 3 | Issue 2 | ISSN : 2582-0095

पण्डित दीनदयाल उपाध्याय के आर्थिक विचारों की वर्तमान सरकार मानव कल्याण में भूमिका का चिन्तन

डॉ. कल्याण सिंह मीना
लेवल – 2 अध्यापक
राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय महाराजपुरा,
तहसील – बस्सी, जिला – जयपुर , राजस्थान

पण्डित दीन दयाल उपाध्याय भारतीय जनसंघ के नेता, विलक्षण बुद्धि, सरल व्यक्तित्व एवं नेतृत्व के अनगिनत गुणों के स्वामी थे। उनका मानना था कि समाजवादी और पूँजीवादी दोनों विचारधाराए व्यक्ति के एकांकी विकास की बात करती हैं जबकि व्यक्ति की समग्र जरूरतों का विकास किए बिना कोई भी विचार भारत के विकास के अनुकूल नहीं हो सकता। उन्होंने व्यक्ति के सर्वांगीण विकास के लिए एकात्म अर्थनीति का प्रतिपादन किया। एकात्म अर्थनीति से तात्पर्य ऐसी अर्थनीति से है जो आर्थिक दृष्टिकोण तक सीमित न होकर जीवन को समृद्ध एवं सुखी बनाने के लिए समग्र पहलुओं को दिशा निर्देशित करती है। उनका मानना था कि किसी भी देश का आर्थिक विकास तभी संभव है जब हम समाज के सबसे निचले पायदान पर जो व्यक्ति है उसका विकास कर पाएं। उसके उत्थान का प्रयास प्राथमिकता पर होना चाहिए। वर्तमान में केन्द्र में भारतीय जनता पार्टी की सरकार है, जिसकी नींव की पहली ईंट रखने में उपाध्याय जी का योगदान था। अतः सरकार द्वारा स्टार्टअप, स्टैंडअप, दीनदयाल उपाध्याय अंत्योदय योजना, मेक इन इण्डिया कार्यक्रम के माध्यम से आम व्यक्ति को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने के लिए कार्य कर रही है। वर्तमान में केन्द्र सरकार कृषि सुधार को आधुनिक तकनीक के माध्यम से करने की दिशा में लगातार प्रयासरत है। ये सभी कार्य पण्डित दीन दयाल उपाध्याय के विचारों से ओत-प्रोत नजर आते हैं। दीन दयाल उपाध्याय के अंत्योदय के लक्ष्य और एकात्म मानवाद के वैचारिकी सिद्धान्त को आत्मसात करके ही मानव कल्याण के लक्ष्यों को भारतीयता के मूल स्वरूप में प्राप्त किया जा सकता है।

पण्डित दीन दयाल उपाध्याय एक महान दार्शनिक, समाजशास्त्री, अर्थशास्त्री, उच्च कोटि के चिन्तक, विचारक और लेखक थे। इस रूप में उन्होंने श्रेष्ठ और संतुलित रूप में विकसित राष्ट्र की कल्पना की थी। इन दिनों पण्डित दीनदयाल उपाध्याय पर निरन्तर चर्चा हो रही है। आर्थिक विकास को लेकर विद्वानों ने अलग-अलग विचार प्रतिपादित किए है। प्रत्येक विचारधारा राष्ट्रीय आर्थिक उन्नति के मूल में खुद को प्रस्तुत करती है। आजादी के बाद भारत में जिस तेजी के साथ अर्थनीति, आर्थिक विषयों, राजस्व प्रणाली और अर्थव्यवस्था की बातें चली निश्चित ही एक नवस्वतंत्र देश के लिए इन बातों की एक स्वभाविक गति थी। मगर भारतीय अर्थनीति के निर्धारण में पश्चिमी दर्शन के पूंजीवाद या समाजवाद के दो ध्रुवों पर चर्चा चली। पहला पूंजीवाद जिसमें व्यक्ति को पूंजी लगाने, उत्पादन करने आदि की निर्वाध छूट है। मगर इसमें व्यक्ति के आर्थिक शोषण की गुंजाइश है। दूसरा चिन्तन समाजवाद है जिसमें उत्पादन एवं विवरण के साधनों पर राज्य का नियन्त्रण रहता है, जिसमें कहा यह जाता है कि यह नियंत्रण समाज का है। मगर समाजवादी व्यवस्था में व्यक्ति की गरिमा और उसके विशेषज्ञ होने की उपेक्षा होती है। जब पण्डित जवाहर लाल नेहरू समाजवाद की नीतियों के सहारे देश की दशा-दिशा तय कर रहे थे। तब भारतीय जनसंघ के नेता दीनदयाल उपाध्याय न सिर्फ विरोध कर रहे थे बल्कि भारत एवं भारतीयता के अनुकूल वैचारिकी दर्शन की पृष्ठभूमि तैयार कर रहे थे। उनका मानना था कि भारतीय विचार नहीं होने के कारण भारत की समस्याओं से निपटने और समाधान देने में अक्षम है। भारतीयता को चलाने के लिए भारतीय दर्शन ही कामयाब हो सकता है। प्रश्न राजनीति का हो या अर्थव्यवस्था का अथवा समाज की विविध जरूरतों का उन्होंने मानव मात्र से जुड़े प्रत्येक प्रश्न की समाधानयुक्त विवेचना अपने लेखों में की है। भारतीय अर्थनीति का स्वरूप क्या हो, इन विषयों को पण्डित दीनदयाल उपाध्याय ने 'भारतीय अर्थनीति विकास की दिशा' पुस्तक में रखा है।

पण्डित दीनदयाल उपाध्याय के आर्थिक विचार

मनुष्य के सर्वांगीण विकास की कल्पना के लिए दीनदयाल उपाध्याय ने एकात्म मानववाद पर आधारित एकात्म–अर्थनीति का प्रतिपादन किया। एकात्म अर्थनीति का तात्पर्य ऐसी अर्थनीति है जो एकांकी आर्थिक दृष्टिकोण तक सीमित न रहकर मानव एवं मानवेत्तर दृष्टि से पारस्परिक एकात्म

सम्बन्धों तक जीवन को सम्बद्ध एवं सुखी बनाने के समग्र पहलुओं का दिशा-निर्देशन करती है। पण्डित दीनदयाल उपाध्याय जी का आर्थिक चिन्तन एकात्म मानववाद से निष्पादित है, जिसमें व्यक्ति एकांकी नहीं है बल्कि सम्पूर्ण की एक इकाई है। उनके अनुसार व्यक्ति मन, बुद्धि, आत्मा एवं शरीर का एक समुच्चय है। अतः मानव के संदर्भ में इन चारों को विभाजित करके नहीं देखा जा सकता।

आर्थिक दृष्टि से दीनदयाल जी तीन बातों को महत्वपूर्ण मानते थे। प्रथम उत्पादन को बढ़ाना, 2. समान वितरण करना, 3. संयमित उपभोग, इन तीनों को मिलाकर उन्होंने एक नाम दिया अर्थायाम। इन तीनों में सन्तुलन स्थापित करने में राज्य का दायित्व क्या हो या नहीं हो ऐसा कहना उचित नहीं है। उनका मानना था कि आर्थिक क्षेत्र में सामान्य नियोजन, निर्देशन, नियमन और नियंत्रण का दायित्व राज्य सरकार पर होना चाहिए।

पण्डित जी विकेन्द्रित व्यवस्था के पक्षधर थे। आर्थिक सत्ता का केन्द्रीकरण आर्थिक लोकतंत्र के विरूद्ध है। पूंजीवादी अर्थव्यवस्था में आर्थिक केन्द्रीकरण की प्रवृति होती है। इसमें आर्थिक शोषण होता है। जबकि समाजवादी अर्थव्यवस्था में उत्पादन की प्रणाली पर राज्य का नियंत्रण होता है उनका मानना था कि दोनों ही व्यवस्थाएं व्यक्ति के प्रजातंत्रीय अधिकार और स्वभाविक विकास के प्रतिकूल हैं। अतः हमें विकेन्द्रीकरण के साथ-साथ शक्तियों के विकन्द्रीकरण पर भी विचार करना होगा।

पण्डित दीनदयाल जी मानते हैं कि आर्थिक क्षेत्र में सामान्य नियोजन, निर्देशन, नियमन और नियंत्रण का दायित्व राज्य सरकार पर होना चाहिए इसलिए उन्होंने राज्य को ही दायित्व दिया कि कौन से उद्योग धन्धे राज्य के अधीन होने चाहिए। भारी उद्योगों का राष्ट्रीयकरण होना चाहिए, रक्षा उद्योग, भारी पूंजी वस्तु उद्योग राष्ट्र के अधीन हो, परन्तु भारत के लिए छोटे-छोटे उद्योग ज्यादा उपयोगी हैं। बड़े उद्योगों में केन्द्रीकरण की प्रवृति पाई जाती है जबकि छोटे उद्योग भारतीय श्रमिक की पारस्परिक कुशलता स्थानीय आवश्यकताओं आदि की शर्ते पूरी करते हैं। परन्तु बड़े व छोटे उद्योगों का तालमेल और गठबन्धन भारतीय अर्थव्यवस्था में जरूरी है इसलिए दीनदयाल जी ने क्षेत्र निर्धारण की बात कही और इस संदर्भ में उनका कहना था कि लघु उद्योग उपभोग वस्तुएं बनाए और बड़े पैमाने के उद्योग उत्पादन वस्तुएं बनाए। जिससे दोनों प्रकार के उद्योग रह सकें।

कृषि विकास के कार्यक्रमों पर पण्डित जी का ध्यान गहनता से था। उनके अनुसार कृषि विकास के कार्यक्रमों को दो हिस्सों में बाँट सकते हैं- 1. प्राविधिक, 2. संस्थागत । प्राविधिक कार्यक्रम के अन्तर्गत खेती की पद्धति में आधुनिकतम तकनीक का प्रयोग करने में हमें संकोच नहीं होना चाहिए। मगर मशीन का प्रयोग करते समय हमें यह संयम बरतना होगा कि उससे किसान के हाथ बेरोजगारी न लगे। जबकि संस्थागत कार्यक्रम के अन्तर्गत भूमि सुधार, सहकारिता, कृषि क्षेत्र के लिए पूंजी आदि जुटाने की संस्थाएं विकसित करने पर पण्डित जी ने विचार व्यक्त किये थे।

पण्डित दीनदयाल उपाध्याय जी हर हाथ को काम के सिद्धान्त को प्रजातन्त्र की रीढ़ मानतें थे। उनके अनुसार काम जीविकोपार्जन हो तथा व्यक्ति को उसे चुनने की स्वतंत्रता हो। यदि काम के बदले राष्ट्रीय आय का न्यायोचित भाग उसे नहीं मिलता तब उस काम की गिनती बेगार में होगी। इस दृष्टि से न्यूनतम वेतन न्यायोचित वितरण तथा किसी न किसी प्रकार की सामाजिक सुरक्षा की व्यवस्था आवश्यक हो जाती है।

उनके अनुसार शासन का उद्देश्य अंत्योदय की परिकल्पना के अनुरूप होना चाहिए उनका मानना था कि किसी भी देश का आर्थिक विकास तभी संभव है जब हम समाज के अन्तिम छोर पर खड़े व्यक्ति का विकास कर सकें। अर्थात समाज के निचले पायदान पर जो व्यक्ति है उसके उत्थान का प्रयास प्राथमिकता होनी चाहिए।

पण्डित दीनदयाल उपाध्याय की एकात्म अर्थनीति मूलतः राष्ट्र की एकता, सुरक्षा, प्रत्येक व्यक्ति को न्यनूतम जीवन स्तर का आश्वासन, प्रत्येक व्यक्ति को आजीविका के अवसर उपलब्ध कराने की आवश्यकता, उत्पादन साधनों के अनुसार औद्योगिकी के विकास की आवश्यकता तथा प्राकृतिक साधनों का मानवीय दृष्टि और आवश्यकतानुसार दोहन, निरपेक्ष और सापेक्ष रूप से अभिव्यक्त है। इस दृष्टि से वह व्यक्ति को सशक्त देखना चाहते हैं और राष्ट्र को भी। इन दोनों के मूल में मानव को केन्द्र मानते हुए समस्त मानव जाति के कल्याण की दृष्टि दीनदयाल जी के चिन्तन में दिखाई पड़ती है।

पण्डित दीनदयाल उपाध्याय के विचारों का वर्तमान सरकार की नीतियों पर प्रभाव

आज सम्पूर्ण विश्व आर्थिक समृद्धि के पीछे भाग रहा है। उत्पादन की विधियों में अनेक नए अन्वेषण हुए। उत्पादन में प्रचंड वृद्धि हुई। वर्तमान में हम इक्कीसवीं शताब्दी में जी रहे हैं। ज्ञान, विज्ञान, अन्तरिक्ष चिकित्सा में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है। परन्तु इस प्रगति के बीच देश के निचले स्तर पर खड़े व्यक्ति को क्या मिला। आर्थिक असानता की खाई बढ़ती जा रही है।

पण्डित दीनदयाल उपाध्याय के विचारों से प्रेरित होकर स्किल इण्डिया मिशन की शुरूआत केन्द्र सरकार द्वारा की गयी। जिसके अन्तर्गत कौशल विकास और अन्य उपायों के माध्यम से आजीविका के अवसरों में वृद्धि कर शहरी और ग्रामीण गरीबी को कम करना है। भारत सरकार इस पर 500 करोड़ रूपये खर्च करने जा रही है।

केन्द्र सरकार ने एक कार्यक्रम मेक इन इण्डिया 25 दिसम्बर 2014 को शुरू किया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य बहुराष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय कम्पनियों को भारत में अपने उत्पादकों के निर्माण के लिए प्रोत्साहित करना तथा रोजगार सृजन एवं कौशल वृद्धि पर ध्यान केन्द्रित करना है। यह कार्यक्रम वैश्वीकरण के इस दौर में भारत के निर्माण और रोजगार के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में मील का पत्थर साबित होने वाला कार्यक्रम है।

पण्डित दीनदयाल उपाध्याय जी अंत्योदय की बात करते थे उनके मन में कतार में खड़े अन्तिम व्यक्ति अर्थात समाज का सबसे निचला वर्ग तक खुशहाली और समृद्धि का प्रकाश पहुँचाने की चिन्ता का ही प्रतिफल है कि वर्तमान में जब केन्द्र में उसी दल की सरकार है जिसकी नींव की

पहली ईंट रखने में पण्डित दीनदयाल उपाध्याय जी का योगदान था। इस स्थिति में उनके विचारों का प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है। स्टार्टअप, स्टैंडअप जैसी योजनाओं के माध्यम से सरकार ने अन्तिम व्यक्ति को सक्षम एवं स्वावलम्बी बनाने की दिशा में कार्य को आगे बढ़ाया है।

स्टार्टअप इण्डिया की शुरूआत 16 जनवरी 2016 को की गई। इसका मुख्य उद्देश्य नए कारोबारियों को बढ़ावा देना तथा कारोबार शुरू करने के लिए अनुकूल वातावरण का सृजन करना है। स्टैंडअप योजना की शुरूआत 5 अप्रैल 2016 को की गयी इस योजना के अन्तर्गत नई कम्पनियाँ स्थापित करने हेतु दस लाख से एक करोड़ तक का ऋण देना सुनिश्चित किया गया। इस योजना के माध्यम से उस वर्ग को आत्मनिर्भर बनाने की कोशिश की गई जो लम्बे समय से हाशिए पर था। इन योजनाओं को लेकर सरकार का दृष्टिकोण साफ है कि आम जन महज नौकरी की निर्भरता से ऊपर उठकर मुख्य धारा से जुड़े और आर्थिक रूप से स्वावलम्बी बने साथ ही दुसरो के लिए अवसर पैदा करें।

पण्डित दीनदयाल उपाध्याय कृषि सुधारों पर जोर देते थे। वे कृषि में भारतीय कृषि के अनुरूप आधुनिकता चाहते थे। वर्तमान में केन्द्र सरकार कृषि सुधार को आधुनिक तकनीक के माध्यम से करने की दिशा में लगातार प्रयासरत है। इसी प्रकार उन्होंने हर हाथ को काम, हर खेत को पानी यह विचार दिया था। विडंबना देखिए आज दशकों बाद भी ये समस्या बनी हुई है। विकास चाहे जितना हो अगर हर हाथ को काम नहीं मिलेगा तो भविष्य में सामाजिक स्तर पर गम्भीर समस्याओं का सामना करना पड़ेगा।

आज अगर केन्द्र सरकार की विकास यात्रा के केन्द्र में सबका साथ सबका विकास की मूल भावना नजर आती है तो प्रेरणा स्रोत के रूप में दीनदयाल उपाध्याय जी के विचार ही दिखाई पड़ते हैं। उनका मानना था कि जब तक व्यक्ति आर्थिक रूप से सक्षम नहीं होगा वह राजनीतिक रूप से स्वतंत्र नहीं हो सकता। आज सरकार आम व्यक्ति को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में जिन प्रयासों पर सतत काम कर रही है वह कार्य इन्हीं विचारों के ओत-प्रोत नजर आते हैं। पण्डित जी ने अपने चिन्तन में आम व्यक्ति से जुड़ी जिन चिन्ताओं और समाधानों को समझाने का प्रयास दशकों पहले किया था आज भारत सरकार द्वारा उन्हीं विचारों को केन्द्र में रखकर नीतियों का निर्माण किया जा रहा है।

पण्डित दीनदयाल उपाध्याय जी का चिन्तन शाश्वत विचारधारा से जुड़ा है। इसके आधार पर उन्होंने राष्ट्रभाव को समझने का प्रयास करते हुए समस्याओं पर विचार किया। चाहे प्रश्न राजनीति का हो अथवा अर्थव्यवस्था का, उन्होंने मानवमात्र से जुड़े सभी प्रश्नों की समाधानयुक्त विवेचना अपने वैचारिक लेखों में की है। पण्डित दीनदयाल उपाध्याय के अनुसार भारत की समस्त नीतियां भारतीयमुखी होनी चाहिए। हमारे लिए पाश्चात्य पूंजीवाद व समाजवाद दोनों ही उपयुक्त नहीं है। भारतीय जीवन दर्शन इन दोनों से परे विशुद्ध मानवतावादी है। समृद्ध और सुखी जीवन के लिए लालायित समाज भीषण संभ्रण के चौराहे पर खड़ा है। ऐसे में अपनी उपादेयता सिद्ध करने वाली भारतीय संस्कृति, उसके आर्थिक नैतिक जीवन मूल्य, आदर्श जीवन के मापदण्ड जैसे यक्ष प्रश्नों का समाधान करने वाला अर्थ वैज्ञानिक दीनदयाल उपाध्याय द्वारा प्रस्तुत आर्थिक दर्शन मानव कल्याण के लिए वरदान सिद्ध होगा।

पण्डित दीनदयाल उपाध्याय का आर्थिक चिन्तन उस समय जितना समीचीन था उतना ही आज भी है। कोई भी नीति निर्धारक संगठन या सरकार जो गरीबों के लिए कल्याणकारी योजनाएं लाना चाहती है एवं मानव कल्याण के मार्ग में प्रशस्त होना चाहती है, उसे दीनदयाल जी के एकात्म मानववाद एवं अंत्योदय के आर्थिक चिन्तन को आधार बनाना होगा। वर्तमान केन्द्र सरकार की आर्थिक एवं मानव कल्याणकारी नीतियां अत्यन्त प्रभावकारी हैं। जिसमें भविष्य की झलक दिखाई देती है। जिससे मानव कल्याण के लिए एक रचनात्मक एवं प्रगतिशील परिस्थितियां उत्पन्न की जा सकें अपितु मानव कल्याण के स्थायी विकास को सकारात्मक दिशा मिल सके।

संदर्भ ग्रंथा –

1. महेश चन्द्र शर्मा, दीनदयाल उपाध्याय सम्पूर्ण वाडगम्य, खंड पांच, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली , 2016, पृष्ठ 173–280
2. हृदय नारायण दीक्षित, तत्वदर्शी दीनदयाल उपाध्याय, दीनदयाल उपाध्याय सेवा प्रतिष्ठान, लखनऊ, 1996, पृष्ठ 72-85
3. दिलीप अग्निहोत्री, दीनदयाल उपाध्याय के विचार और दर्शन आज भी प्रासंगिक, प्रभा साक्षी, डेलीहंड, 25 सितम्बर, 2018, पृष्ठ 1-2
4. डॉ० कुलदीप चन्द अग्निहोत्री, दीनदयाल उपाध्याय चिन्तन की प्रासंगिकता, प्रवक्ता.कॉम, 01.03.2018, पृष्ठ 3
5. शिवानन्द द्विवेदी, दीनदयाल उपाध्याय सिर्फ नाम नहीं बल्कि एक विचार है, जागरण सवेरा, 01.03.2018, पृष्ठ 2
6. महेश चन्द शर्मा, दीनदयाल उपाध्यायः कर्तव्य एवं विचार, प्रभात पब्लिकेषन, नई दिल्ली, 1994, पृष्ठ 250-258
1. 7.दीनदयाल उपाध्याय, एकात्म मानववाद, प्रभात पब्लिकेशन, 2016, पृष्ठ 80-82
7. शरत अनन्त कुलकर्णी, एकात्म अर्थनीति, सुरूचि प्रकाशन, केशव कुंज, झण्डेवाला, नई दिल्ली, 2014, पृष्ठ 10-15